JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# "प्रेमचंद के प्रमुख उपन्यासों का संक्षिप्त अध्ययन"

**श्रीमती.अनुष्का प्रदीप पाचंगे**
**शोध –छात्रा**
**श्रीमती.नाथीबाई ठाकरसी विश्वविद्यालय**
**नाशिक**

उपन्यास को प्रौढ़ता प्रेमचंद के ही हाँथों मिली है |इसके पूर्व का उपन्यास साहित्य मात्र कौतूहल की सृष्टि करता था|उपन्यास को मानवजीवन के नजदीक लाने का श्रेय प्रेमचंद को ही जाता है |इनके उपन्यासों में पहली बार ही जनमानस को वाणी मिली|किसानों की आर्थिक अवस्था,सामाजिक कुरीतियाँ,हिन्दू-मुस्लिम ऐक्य,जमीदारों और पुलिस के अत्याचार मध्यवर्गीय जीवन की अनेकमुखी समस्याएं कलात्मक रूप से इनकी रचनाओं में चित्रित हुई हैं |वर्तमान शोध-आलेख में उनके उपन्यासों के माध्यम से उक्त प्राविित्तियों का संक्षिप्त प्रवृत्तियाँ प्रस्तुत कर रही हूँ |

**(१) सेवासदन:** यह प्रेमचंद के प्रारंभिक उपन्यासों में से एक है, जिसमें उन्होंने वेश्यावृत्ति की समस्या पर गंभीर विचार व्यक्त किया है | इसके केन्द्रीय चरित्र सुमन के माध्यम से उन्होंने दिखाया है कि किसी स्त्री द्वारा वेश्यावृत्ति अपनाने के पीछे दहेज़ प्रथा तथा पति द्वारा तिरस्कार पूर्ण व क्रूर व्यवहार जैसे कारण जिम्मेदार है |ऐसी स्थिति में स्त्री के सामने दो विकल्प बचते हैं |एक वह आत्महत्या कर ले या दूसरा वह वेश्या बन जाये | प्रेमचंद ने इसमें वेश्याओं के समाज की मुख्य धारा में लौटने के लिए सेवासदन की स्थापना का विकल्प प्रस्तुत किया है |जो उनके शरुआती आदर्शवाद से प्रभावित है | इस उपन्यास में सांप्रदायिकता के प्रश्न का भी संक्षिप्त विश्लेषण दिखाई पड़ता है |

**(२) प्रेमाश्रम :** इसका रचनाकाल १९१८-२० के बीच का है उसमें प्रेमचंद ने ब्रिटिश शासन के अंतर्गत जमीदारों और किसानों के संबंधों का चित्रण किया है | ब्रिटिश शासन ने जनता के शोषण के लिए किस प्रकार जमींदार और साहूकार वर्ग को अपना सहायक बनाया हुआ था –इसी शोषणकारी सबंध का पर्दाफाश इस उपन्यास में किया गया है | इसका नायक प्रेमशंकर नामक युवक है जो उच्चवर्ग से सम्बंधित है | उसपर आधुनिक समतावादी विचारों का इतना गहरा असर होता है कि वह किसानों के हित में अपना अधिकार छोड़ देता है, और ग्रामसेवा में अपना जीवन व्यतीत करता है | यह समाधान कुछ काल्पनिक प्रतीत होता है | वस्तुत: शुरुवात में प्रेमचंद पर आदर्शवाद का गहरा प्रभाव था जो इसमें परिलक्षित होता दिखाई देता है |

**(३) रंगभूमि:** यह १९२३ ई. में प्रेमचंद द्वारा लिखा गया उपन्यास है जिसमें 'पूँजीवाद' या महाजनी सभ्यता के साथ भारतीय गावों की शुरूआती टकराहट को प्रस्तुत किया गया है | इसमें विदेशी पूंजीवाद के साथ-साथ स्वदेशी पूंजीवाद के आतंरिक शोषणधर्मी चरित्र का खुलासा किया गया है| इसका नायक सूरदास गाँधीवादी मूल्यों का प्रतिनिधि है, जो औद्योगीकरण के विरुद्ध सत्याग्रह छेडता है और अपने मानवीय अधिकारों और सत्य के लिए सर्वस्व न्योछावर करता है | भरतसिंह, विनय और महेंद्रकुमार तीनों सामंती चरित्र हैं और तीनों ही स्वाधीनता आंदोलन से जुड़े है | इनके माध्यम से प्रेमचंद ने स्वाधीनता संग्राम के वर्गीय चरित्र का प्रश्न उठाया है | सुभाजी के माध्यम से नारी दमन को प्रस्तुत किया है, तो सोफिया के माध्यम से नारी के महान आदर्श को (सोफिया ही परिवर्तित रूप में गोदान के अंत की मालती के रूप में नजर आती है |) रंगभूमि को कुछ अलोचाकोंं ने महाकाव्यात्मक उपन्यास का दर्जा भी दिया है |

**४) कायाकल्प:** यह १९२६ ई .में लिखा गया उपन्यास है | इसमें मूलतः सम्प्रदायिकता की समस्या को उठाया गया है | प्रेमचंद दिखाते हैं कि दोनों धर्मों के कुछ सनकी लोग कैसे सम्प्रदायिक दंगोंं की आड़ में अपने सांसारिक हित साधते हैं | उन्होंने हिन्दुओं के इस मनोवृत्ति पर भी चोट की है कि, किसी मुस्लमान द्वारा अपहृत अपनी ही बेटी को अशुद्ध मानकर स्वीकार ना किया जाय | इस उपन्यास का नायक चक्रधर है जो समाजसेवक बनना चाहता है, उसे जमींदार की लड़की मनोरमा से प्रेम होता है | किन्तु दोनों का विवाह नहीं हो पाता बाद में वह सारी परम्पराओं को ठोकर मारते हुए एक मुस्लिम परिवार की विधवा से शादी करता है | इसके सामानांतर एक कथा पुनर्जन्म की भी चलती रहती है जिसने इस उपन्यास को कमजोर बनाया है |

**५) निर्मला :** १९२७ में लिखा गया उपन्यास है, यह उपन्यास अनमेल विवाह की समयसा पर आधारित है | उदयभानुलाल नामक वकील अपनी बेटी निर्मला की शादी अच्छे परिवार में करना चाहता है| किन्तु उसकी आकस्मिक मृत्यु के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर हो जाती है और निर्मला की शादी तीन बच्चों के बूढ़े बाप तोताराम से कर दी जाती है |यह शादी सफल नहीं हो पाती है | तोताराम के बेटे मंशाराम और निर्मला में प्रेम की भावना पनपती है | किन्तु,यह एक सरल मैत्रीभाव है,समवयस्क होने का |जिससे बाप बेटे से ईष्या करने लागता है | फलस्वरूप बेटे उद्दंड हो जाते हैं और गृहयुध्द जैसी स्थिति बन जाती है | अंत में दोनों बेटों की मृत्यु हो जाती है तथा तीसरा बेटा पाखंडी साधू के बहकावे में आ जाता है और घर छोड़कर चला जाता है| प्रेमचंद यही दिखाना चाहते हैं कि अनमेल विवाह किस प्रकार परिवार की व्यवस्था को भीतर से तहस-नहस कर देती है |

**६) गबन:** प्रेमचंद ने यह उपन्यास १९३० में लिखा | इसका नायक रामनाथ मधयवर्गीय युवकों क प्रतिनिधि है| जिसकी आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत नहीं है किन्तु आकांक्षाएं ऊँची और रंगीन है | उसकी पत्नी जालपा यद्यपि बहुत अच्छी नहीं है, किन्तु आभूषणों के प्रति उसका गहरा लगाव है | रमानाथ एक बार अपनी पत्नी के गहनों की अभिलाषा पूर्ण करने के लिए सरकारी विभाग में गमन करता है किन्तु पकड़ा जाता है | प्रेमचंद दिखाना चाहते हैं कि अनियंत्रित आकांक्षाएँ कैसे व्यक्ति

के लिए घातक सिध्द होती हैं | इस उपन्यास में उच्च वर्ग के चरित्रों का हल्कापन भी दिखाया गया है | मनोवैज्ञानिक सूक्षमता की दृष्टी से यह उपन्यास बेजोड़ है |

७)**कर्मभूमि:** यह १९३२ में लिखा गया उपन्यास है जिसमें कई समस्याओं को एक साथ उठाया गया है | इसका नायक अमरकांत समाजसेवक है जो समाजसेवा के अनेक रूपों से होता हुआ बुनियादी स्तर तक पहुंचता है और हरिजन वर्ग की सेवा को अपना लक्ष्य बनाता है | वह जनता है कि हरिजनों की समस्या का समाधान सिर्फ सामाजिक स्तर पर संभव नहीं है, उसके लिए आर्थिक शोषण से मुक्ति भी जरुरी है | यह महंत के शोषण के विरुध्द अहिंसक तरीके से लगानबंदी का आन्दोलन चलाता है, गिरफ्तार होता है किन्तु हार नहीं मनाता | इसके सामानांतर अमरकांत और एक मुस्लिम लड़की शकीना के मध्य 'प्लेटोनिक' प्रेम ही दिखाया गया है | किन्तु, प्रेमचंद ने उसे ज्यादा बढ़ने नहीं दिया | हृदय परिवर्तन जैसी कल्पनाएँ इस उपन्यास में भी है किन्तु समस्याओं की गहरी समझ के कारण यह उपन्यास यथार्थ के परिपक्व स्तर को छू सका है |

८) **गोदान:** गोदान उपन्यास का केंद्रबिंदु है गाय की इच्छा रखना| गाय की यह इच्छा होरी की ही नहीं बल्कि हर कृषक की है और गाय न खरीद पाने की मजबूरी उसकी ही नहीं, हर किसान की है|जमींदार व साहूकार वर्ग ने धर्म, मरजाद और बिरादरी के माध्यम से एक ऐसी व्यवस्था बुनी है, जिसमें किसान सिर्फ जिंदा रह सकता है| आकांक्षाएं पूरी नहीं कर सकता | इस आर्थिक अभाव एवं गांव की आकांक्षा के अंतर्विरोध के कारण गोदान की त्रासदी निर्मित होती है| होरी बिना धन दिए भी गाय को ले आना चाहता है -जैसा भोला की गाय को देखकर होरी का मन डोल गया और वह सोचता है कि,क्यों न भोला से यह गाय ले ली जाये |पैसे बाद में दिए जाते रहेंगे|उसके मन में लालच घर कर ली है और वह भोला से वह गाय हथिया लेता है |

आर्थिक अभाव के बावजूद गाय की व्यवस्था करता है| इसी गाय की ईर्ष्या के कारण ही उसका भाई हीरा उसे जहर दे देता है | गाय मर जाती है और होरी का जीवन यहीं से संकटग्रस्त होने लगता है| गाय को लाने की प्रक्रिया में ही गोबर झुनिया से मिलता है | झुनिया घर छोड़कर आती है और पंचायत में होरी को जुर्माना होता है | इसीका अगला चरण यह भी है कि गोबर घर-बाहर नजर ना मिल पाने के कारण शहर भागता है और धीरे-धीरे शहर का ही हो जाता है |कुल मिलाकर होरी की त्रासदी के सारे सूत्र कहीं तार्किक रूप में तो कहीं संयोग से गाय की महत्वकांक्षा से जुड़े हैं |

इस प्रकार गोदान उपन्यास का प्रारंभ गाय रखने की आकांक्षा से शुरू होकर "गो-दान" की बिडंबनापूर्ण मांग पर समाप्त होता है | रचना के अंत गो-दान की परम्परा होरी की त्रासदी को और गहरा बनाती है |स्पष्ट है कि संपूर्ण कथानक गाय की आकांक्षा पर केंद्रित है किंतु, गाय पर केंद्रित होना गोदान की धारणा का पर्यायवाची नहीं है| प्रेमचंद ने इसे गोदान ही क्यों कहा इसका उत्तर उपन्यास की परिणिति में खोजा जा सकता है ,यह राजनैतिक महत्वाकांक्षा पूरी ना होने की त्रासदी नहीं बल्कि दोहरी त्रासदी है |यह दोहरी त्रासदी इसलिए है कि जो व्यक्ति जीवन भर संघर्ष करते हुए एक गाय नहीं खरीद सका |उस व्यक्ति की मौत के बाद भी धर्म और जात बिरादरी उसका पीछा नहीं छोड़ती और उसके परिवार से अपेक्षा करती है कि वह गाय का दान करें |

अस्तु,कह सकते हैं कि मुंशी प्रेमचंद ने सचमुच ही उपन्यास जगत में क्रांति लाने का कार्य किया| नहीं तो उपन्यास जगत पता नहीं कब तक तिलस्मी-ऐयारी,मनोरंजकता के इर्द गिर्द घूमता रहता |प्रेमचंद के उपन्यास जगत में इसी महत्वपूर्ण बदलाव के कारण उन्हें "उपन्यास सम्राट"कहा गया है| वस्तुतः यह कहना कि प्रेमचंद मनोरंजन से परे उपन्यास युग के जन्मदाता हैं,अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं होगा|

सन्दर्भ ग्रंथ सूची:

१) सेवासदन:लेखक प्रेमचंद::प्रकाशक डायमंड पॉकेट बुक :: छठा संस्करण प्रकाशन वर्ष २०१३

२) प्रेमाश्रम:लेखक प्रेमचंद::प्रकाशक वाणी प्रकाशन :: पांचवा संस्करण प्रकाशन वर्ष २०१३

३) रंगभूमि :लेखक प्रेमचंद::प्रकाशक मनोज पब्लिकेशन दिल्ली ::आठवां संसस्करण प्रकाशन वर्ष २०१३

४) कायाकल्प :लेखक प्रेमचंद::प्रकाशक वाणी प्रकाशन :: आठवां संस्करण प्रकाशन वर्ष १९२८

५) निर्मला:लेखक प्रेमचंद::प्रकाशक डायमंड पॉकेट बुक :: आठवां संस्करण प्रकाशन वर्ष २०१३

६) गबन :लेखक प्रेमचंद::सरस्वती प्रेस बनारस सिटी :: प्रकाशन वर्ष १९३१

७) कर्मभूमि :लेखक प्रेमचंद::प्रकाशक वाणी प्रकाशन :: आठवां संस्करण प्रकाशन वर्ष २००२